41

'लोग भूल गए है' काव्य में नारी दशा

प्रा.डॉ.महादेव चिंतामणी खोत
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
श्रीकृष्ण महाविद्यालय गुंजोटी ता.उमरगा, जि.उस्मानाबाद

भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृति मे नारियों को शोषण होता आया है। समाज में औरत को कोई स्वतंत्र अस्तित्व नही है। पीढियों से नारियों का शोषण किया जा रहा है। इस शोषण चित्रण रघुवीर सहायजी ने अपने काव्य किया है। स्त्री के सामने पुराणे आदर्श सांस्कृति के बहाने उसे अत्याचार सहन करने में आदर्श बनने का वर्णन किया है।

कवि रघुवीर सहायजी 'लोग भुल गए है' काव्यसंग्रह के माध्यम से औरतो की दशाओंका चित्रण करते है। कवि इस काव्यसंग्रह की 'नन्ही लडकी' कविता के माध्यम लडकी का वर्णन किया है। नन्ही लडकी तन्मयता से रोटी खाती है नन्ही लडकी तन्मयता से फल खाती है और तन्मयता से सो जाती है। नन्ही लडकी को इस दुनिया से कोई लेना देना नही है। लोग उसे फल और रोटी देते है और वह खाकर वही धूप में सो जाती है। उस अपनी माता-पिता की याद नही आनी चाहिए इस सतर्कता की स्पष्ट करते है। कवि रघुवीर सहाय जी ने 'नन्ही लडकी' कविता में नन्ही लडकी की मनोदशा का बारिकी से वर्णन किया है।

रघुवीर सहाय अपने शब्दों में लिखते है-

नन्ही लडकी खाती है
तन्मय एक रोटी
खा लेती है फिर तनिक थमकर
एक फल और कुछ तन्मय
फिर वह लेट जाती है धूप में।

कवि रघुवीर सहायजी ने 'लोग भूल गए है' काव्यसंग्रह की 'उम्र' नामक छोटी सी कविता में लडकी के बारे में विचार प्रस्तुत किए है। भारतीय समाज व्यवस्था में लडकियों की अवहेलना की जाती है। माता-पिता अपनी बेटी की परवरिश बहुत लाड प्यार से करते है। लडकी को जरासा दुःख हुआ तो उसे सांत्वना देते है। उसके आँखो मे आँसु कभी भी देख नही पाते है। लेकिन लडकी शादीशुदा बन जाती है तब उसे कोई ससुराल वाले दुःख पहूँचाते है तो भी माता पिता असमर्थता से कुछ नही करते है। उसके दुःख का कोई इलाज नही कर पाते है। क्योंकि उनकी मजबूरी रहती है। कवि रघुवीर सहाय अपने शब्दो में 'उम्र' कविता में लिखते है-

जब तुम बच्ची थी तो मै तूम्हें
रोते हुए देख नही सकता था
अब तुम रोती हो तो देखता हूँ मै।

कवि रघुवीर सहायजी ने 'लोग भूल गए है' काव्यसंग्रह की 'स्त्री' नामक कविता में स्त्रियों के दूःखो का वर्णन किया है इतनी यातना पीडा भोगकर भी स्त्री मुस्कुराती हुई जीवनयापन करती है। भारतीय समाज मे परिवार में दुःख भोगती हुए जीती है। कवि रघुवीर सहाय ने स्त्रियों की करुण दशाओं को अपनी कवितायें उजागर किया है, पुरुष प्रधान संस्कृती की ओर से होने वाले अत्याचार को सहकर कैसी जीवन जीती है इसका वर्णन किया है, कवि रघुवीर सहायजी 'स्त्री' कविता में अपने शब्दो में लिखते है-

स्त्री की देह
मुस्कुराती स्त्री
पीठ इधर करते ही
उसके जीवन के
दस बरस और दिखे
हर स्त्री के
गर्भ मे रहते है
उसके आनेवाले क्लेश।

औरतो की पुरी जिंदगी दुःख से भरी होती है। फिर भी वह इन सभी दुःखो को सहकर मुस्कुराती हुई दुःख झेलकर पुरुषों कों साथ देकर जीवनयापन करती है। कवि रघुवीर सहाय ने 'लोग भूल गए है' काव्यसंग्रह की 'औरत का सीना' कविता में पुरुष प्रधान संस्कृति के अंदर एक स्त्री अपने कार्य कुशल बनाने की कोशिश करती है। भारतवर्ष मे कई औरते चौराहे या बाजारों में जाकर माल की खरिददारी नही करती बल्कि जब पुरुष घर का सामान लाकर देते है तब घर का काम चलाती है लेकिन कुछ औरते अभी अभी अपनी दबी जीवनी से बाहर आकर सक्षम बन रही है। 'औरत का सीना' कविता में ऐसी सक्षम औरतो को देखकर कवि गर्व महसूस करते है। औरतों

ने खुद का कारोबार खुद देखना चाहिए। ऐसी भावना कवि स्पष्ट करते है। समाज में पुरुषों के जितना महत्व है उतना ही स्त्रीयों को महत्व होना चाहिए। जब दोनो को समान महत्व होता है तब समाज विकसीत होगा और जीवनमान उपर उठ जायेगा। कवि रघुवीर सहाय 'लोग भूल गए है' काव्यसंग्रह की 'औरत का सीना' कविता में लिखते है-

तब मैने देखा कि उसको इतने करीब
पाकर यह क्या हुआ इतना अजब दर्द
वह नफरत नही थी वासना नही थी
वह जो था अंत मे आदर था
वह था उसा सीना आँखो क सामने
उसकी अकेली असहाय
और गैर बराबर औरत
का वह सर्वस्व था और मेरे बहुत पास।

कवि रघुवीर सहायजी ने 'लोग भूल गए है' काव्यसंग्रह की 'अभिनेत्री' कविता मे अभिनय करने वाली औरत का चित्रण किया है । औरत अलग अलग तरह का अभिनय करती हुयी अभिनेत्री बन जाती है । तब अपनी भूमिका से अपनी दयनीयता बताती है । जब वह हँसती है तब उसकी बाते बनावटी होती है। औरत को समाज में अपमान, मान हानी, अत्याचार अन्याय से बार बार अपमानीत होना यानी मरना पडता है। औरत अंदर से अंदर टूट-फूट कर फिर नये विचार से अपने को निर्माण करती है। यह पुरुष प्रधान संस्कृती में औरतों के लिए हँसना, रुलाना, सताना अपने अनुरुप बनाना पुरुषों का काम है। यह औरत को अभिनय कर के करना पडता है।

कवि रघुवीर सहाय अपनी कविता लिखते है कि-

अभिनेत्री जब बँध जाती है
अपने अभिनय की शैली से
तो चीख उसे दयनीय बनाती है
पुरुषो से कुछ ज्यादा
और हँसी उसे पुरुषो से ज्यादा बनावटी
यह इस समाज में है औरत की विडम्बना
हर बार उसे मरना होता है
टूटा हुआ बचाती है
वह अपने भीतर टूट फूट के
बदले नया रचाती है
पर देखो उसके चेहरे पर
कैसी थकान है यह फैली
हँसने रोने को कहती है
उससे पुरुषो की प्रिय शैली।

औरत पुरुषो के निर्देश पर ही सारा जीवनयापन करती है। सब दुःख सहकर दुःखी होते हुए भी परिवार में सुख की निर्मिती करती है। पुरुषों की थकान निकालनेवाली आकर्षण प्रिय शैली बन जाती है। खुद दुःख झेलती है लेकिन दुसरो को सुख प्रदान करती रहती है।

इस संदर्भ में नंदकिशोर ने स्त्री प्रधान कविताओं के बारे में कहते है लोग भूल गए है मे किसी न किसी रुप में स्त्री को विषय बनाकर लिखी गयी उनकी चौदह- पन्द्रह कविताएँ संकलित है। यें कविताएँ प्राथः मधुर नाजूक कविताएँ है। जो हमे स्त्री जाति के दुःख को देखने के लिए प्रेरित करती है और हमारे भीतर उनके प्रति एक गहरा नैतिक दायित्व जगाती है।

कवि ने स्त्री को अभिनेत्री बनाकर अलग-अलग भूमिका निभाकर जगत के पुरुषों से दिए हुए दुःख को भोगती है। ऐसी अवस्था में समाज के सहानुभूती का पात्र बनाती है। डॉ अनंत कीर्ति तिवारी इन कविताओं के बारे में लिखते है कि- याद, बलात्कार 'अभिनेत्री' शीर्षक ऐसी बहुतसी कविताओं में स्त्री के कष्ट को पुरुष प्रधान समाज में उसके ऊपर हुए अत्याचार को बडे विस्तार से शब्द मिलता है तथा उनके प्रति कवि की सघन सहानुभूति प्रत्यक्ष होती है।

इस प्रकार रघुवीर सहाय जी ने 'लोग भुल गए है'काव्यसंग्रह की 'नन्ही लडकी' 'उम्र' 'स्त्री' 'औरत का सीना' अभिनेत्री आदि कविताओं के माध्यम से भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृती में नारियों की दशाओं का चित्रण किया है। भारतीय समाज में स्त्रियौं दुःख झेलकर भी पुरुषों के सुखों में सुखी बनती हुयी स्पष्ट करने की कोशिश की है।

संदर्भ सूची :-

१. लोग भूल गए है - रघुवीर सहाय
२. रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा डॉ अनंत कीर्ति तिवारी
३. निराला से रघुवीर सहाय तक - श्रीकृष्णनारायण कक्कड
४. रघुवीर सहाय संचयिता कष्णा कुमार
५. रघुवीर सहाय का कविकर्म - सुरेश शर्मा